वो सर्द रात

सत्य घटना पर आधारित...

नारायण सिंह राव 'सैलाब'

वो सर्द रात

सत्य घटना पर आधारित...

नारायण सिंह राव "सैलाब"

१

हल्कू के बड़े भाईसाहब के ससुराल वालों ने अहमदाबाद में एक बंगला बनवाया था. इसका गृहप्रवेश का कार्यक्रम रखा गया था. पूस की पूर्णिमा का मुहूर्त था. हल्कू को भी न्योता था. वह रिश्तेदारी निभाने में विश्वास रखता था. उसे लगता था कि रिश्ते पेड़-पोधों की तरह होते हैं, जिन्हें समय-समय पर सींचते रहना चाहिए, नहीं तो वे सूखने लगते हैं.

दिल्ली से अहमदाबाद का सफ़र कोई १५ घंटे का था. हल्कू ने दोपहर वाली ट्रेन पकड़ ली. उसी दिन कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे भी आने थे. छत्तीसगढ़ में सत्तारूढ़ पार्टी को जनता ने उखाड़ फेंका था. मध्यप्रदेश में कांटे की टक्कर रही. और राजस्थान में भी आखिरी गिनती तक सीटों में उतार-चढ़ाव चलता रहा. शाम होते होते-होते स्तिथि स्पष्ट हो पाई. हल्कू यह सब अपने मोबाइल से चुनाव आयोग की वेबसाइट पर लाइव देख रहा था.

ट्रेन जयपुर पहुँचने वाली थी. सोचा कुछ खाने-पीने का बंदोबस्त कर लेना चाहिए. आगे इससे बड़ा स्टेशन नहीं आने वाला है. यहाँ शायद कुछ ठीक-ठाक खाने का मिल जाएगा. ट्रेन में काफी भीड़ थी. कुछ बिना टिकट की सवारियां दरवाजे के पास फर्श पर टिकी हुई थी. टॉयलेट के दरवाजे के पास गैलरी में ढ़ेर सारा सामान भी ठूंसा हुआ था. ट्रेन के दरवाजे पर खड़े अधेड़ उम्र के दो व्यक्ति इन्त्मिनान से आपस में बात कर रहे थे.

हल्कू भी किसी तरह जगह बनाकर दरवाजे पर आ गया. जयपुर उतरने वाली अन्य सवारियां भी अपनी सीटों से खड़ी हो गई थीं. दरवाजे पर लाइन लगा चुकी थी. तभी उसके फ़ोन की घंटी बजी.

फ़ोन हल्कू के पिताजी का था.

पिताजी रिटायर्ड स्कूल हेडमास्टर थे, जिन्हें गाँव में सभी मारसाब (मास्टर जी) के नाम से ही पुकारते थे. उम्र कोई सत्तर के पार. बच्चों को पढ़ाते-पढ़ाते उनकी जिव्हा धारदार हो चुकी थी कि उनकी कही बात को काटने का सामर्थ्य पुरे गाँव में तो क्या शायद पुरे ब्रह्माण्ड में किसी के पास न था. इस अवस्था में भी किसी को भी एक पल में चुप करा सकते थे. कोई भी व्यक्ति बीच में अपनी बात रख कर इस बात की परीक्षा कर सकता था. इसी डर से

बिरले ही उनसे उलझने का साहस कर सकते थे.

ऐसा नहीं था कि वो केवल बकवादी थे. गीता, रामायण, महाभारत, इतिहास और भूगोल का विशेष ज्ञान रखते थे. इसलिए उनकी बातों में सत्य भी होता था और तर्क भी. कोई उनकी बात बीच में काटे, उन्हें बिल्कुल भी पसंद न था.

सेवानिवृत्ति के बाद मारसाब खेती-बाड़ी और पशुपालन में स्वयं को व्यस्त रखते थे. अपने बेटों के पास शहर में जाना उन्हें कतई पसंद न था.

मारसाब स्पष्ट-वादी थे पर राजनीति में खूब रुचि रखते थे. चोर को मुँह पर चोर कहने से डरते न थे. सत्यनिष्ट होने के कारण कई बार पंचायत में दूसरों के इतर राय रखने से चुकते न थे. चाहे उसके लिए उन्हें पुरे गाँव का विरोध ही क्यों न सहना पड़े. लेकिन कलियुग में सत्य का कोई विशेष मोल नहीं है, इस बात से वह वास्ता नहीं रखते थे. उनकी इसी स्पष्टवादिता के चलते गाँव वाले कई बार उन पर दंड कर चुके थे और उनका हुक्का-पानी बंद होता था. लेकिन वह स्वयं कभी दंड नहीं भरते थे. दंड भरने का मतलब होता, स्वयं को गलत साबित करना. उनका कहना होता था कि जब उन्होंने कोई गलती की ही नहीं, तो दंड क्यों भरे. इसलिए उनके परिवार वाले उनकी जानकारी के बिना ही दंड भर देते थे. तब जाकर परिवार का हुक्का-पानी चालू होता था .

हल्कू ने फ़ोन उठाया तो चर्चा चुनाव नतीजों पर शुरू हुई. हल्कू भी इन विषयों में थोड़ी बहुत रुचि रखता था. इसलिए उन दोनों में खुब बात हुई. अपनी पसंदीदा पार्टी की हार के बाद भी वह प्रसन्न थे. उन्हें भरोसा था कि जनता जो फैसला करती है वह सोच विचार कर ही करती है. जनता के निर्णय में कोई न कोई सन्देश छुपा ही होता है, जीतने वाले के लिए भी और हारने वाले के लिए भी.

बाप-बेटे के बीच की यह वार्ता सामने खड़े दोनों व्यक्ति भी सुन रहे थे और बीच-बीच में कभी मुस्कुराकर तो कभी गर्दन हिलाकर सहमति भी प्रकट कर रहे थे.

बात करते-करते कब ट्रेन जयपुर शहर में प्रवेश कर गई, पता ही न चला. ट्रेन की रफ़्तार धीमी होने लगी थी.

‘पापा प्लेटफार्म आ रहा है. कुछ खाने का ले आता हूँ. आपसे बाद में बात करता हूँ.’ - यह कहकर हल्कू ने फ़ोन काट दिया.

अब तक दरवाजे पर भीड़ बढ़ गई थी. लोग अपना सामान लेकर उतरने के लिए पंक्ति में खड़े हो चुके थे.

हल्कू ने फ़ोन सुरक्षित रखने के लिए अपना हाथ पेंट की निचली जेब की तरफ बढ़ाया. लेकिन ये क्या जेब में जाने के बजाय फ़ोन बाहर ही फिसल गया. एक पल के लिए उसके दोनों पंजो पर टकराकर रुका. और फिर सीधे जमीन पर जा गिरा.

ट्रेन धीमी हो रही थी, पर गति अभी भी इतनी तेज़ थी कि बिना हाथ-पैर तोड़े उतरना

असंभव था.

हल्कू को फ़ोन का मूल्य अपने प्राणों के मूल्य से ज्यादा न लगा. इसलिए मन मसोस कर फ़ोन की तरफ देखता रहा. लेकिन पल में ही ट्रेन आगे निकल गई.

जैसे-जैसे ट्रेन धीमी हो रही थी, वह बार-बार चेष्टा कर रहा था कि अब उतर जाए, अब उतर जाए. लेकिन पैर को नीचे करके फिर ऊपर कर लेता था. हाथ-पैर टूट जाने का भय अब भी उसके मन में था.

'अरे! जल्दबाजी मत करो. चोट लग जाएगी.'- सामने खड़े दोनों मित्रों ने एक स्वर में कहा, जो कि अब तक पिता-पुत्र के मध्य हो रही वार्ता के मौन सहभागी थे.

यह फ़ोन हल्कू की पत्नी ने पिछले हफ्ते ही उसे दिलाया था. उसे प्यारा तो था ही, लेकिन फिर भी फ़ोन से ज्यादा उसे उसमें पड़े फ़ोन नंबर और डेटा की चिंता थी. और फिर हल्कू के ऑफिस का बहुत सारा काम फ़ोन से ही होता था.

ट्रेन सुपर फ़ास्ट श्रेणी की थी. फिर भी बड़ा स्टेशन होने के कारण जयपुर में उसका १० मिनट का स्टॉप था. हालांकि फ़ोन स्टेशन से ज्यादा दूर नहीं गिरा था, फिर भी ट्रेन उसके बाद मील-दो-मील तो चल ही चुकी थी.

अब ट्रेन प्लेटफार्म में प्रवेश कर चुकी थी. गति भी अब तेजी से कम हो रही थी.

"मैं अभी लेकर आया." यह कह कर हल्कू धीमी होती ट्रेन से कूद गया और विपरीत दिशा में दौड़ने लगा.

२

“संभल के जाना! जल्दी आना! ट्रेन ५ मिनट से ज्यादा न रुकेगी!” - हल्कू के दो अजनबी मित्रों ने एक साथ आवाज दी.

ट्रेन प्लेटफार्म पर आ गई थी, लेकिन अब भी पूरी तरह से रुकी न थी.

‘हाँ’, कहकर हल्कू ऐसा सरपट भागा जैसे कोई तीर कमान से छूटा हो. कुछ १००-२०० मीटर के बाद पटरी के सहारे का कच्चा रास्ता समाप्त हो गया. पटरी के दोनों तरफ सीमेंट के कई खम्भे और छोटे-छोटे पत्थर जमाये हुए थे. बीच-बीच में कई गड्ढे भी थे. लेकिन यह सब हल्कू की गति को कम न कर सके.

जीवन में हल्कू इससे तेज़ कभी न दौड़ा था. अगर यह तेज़ गति की कोई प्रतियोगिता होती तो आज पहला स्थान उसी का आता. खम्भों को, गड्ढों को, और पत्थरों को कूदता- फांदता, वहां जा पहुँचा जहाँ उसे लगा कि फ़ोन गिरा था. वहां एक सिग्नल्स का बक्सा भी था, ऐसा उसे विश्वास था.

हल्कू जल्दी-जल्दी फ़ोन को ढूँढने की कोशिश करने लगा. संध्या का समय हो रहा था. अन्धकार अपना साम्राज्य फ़ैलाने के लिए तत्पर था. अभी कोई २-३ मिनट ही बीते होंगे की उसे ट्रेन छूटने का भय सताने लग गया.

फ़ोन की तलाश, अन्धकार, और घड़ी की सूइयों में एक दौड़ होने लगी. सभी प्रथम स्थान पर आना चाहते थे. इसमें अंधकार की जीत होती मालूम पड़ती थी.

अँधेरा होने के कारण, हल्कू को कुछ सूझ नहीं रहा था. थोड़ी ही दूर पटरियों के समानांतर चल रही सड़क पर रोड लाइट्स टिमटिमाने लगी. पर उनमें इतनी शक्ति कहाँ थी कि अंधकार को चीर कर पटरियों के पार आ सकती.

सड़क किनारे दो व्यक्ति एक छोटे से खोमचे में बैठे कुछ पकाते हुए दिखे. हल्कू के मन में उम्मीद की किरण जगी. शायद इनके पास कोई टोर्च या टोर्च वाला मोबाइल हो. यह सोचकर हल्कू दौड़ता-हांफता उनके पास जा पहुंचा. समय उसके पास पहले से ही कम था. जितने कम शब्दों में अपनी बात को समझा सकता था, समझाने की कोशिश की. उनसे अनुनय विनय किया. लेकिन उनसे कोई मदद न मिल सकी. दौड़कर वापिस उस जगह आया जहाँ वह फ़ोन ढूंढ रहा था. आते हुए उसकी नजर एक और सिग्नल के बक्से पर पड़ी. उसे अब भ्रम हो गया, कि फोन वास्तव में किस बक्से के पास गिरा था.

इतने में प्लेटफार्म की और से कोई टोर्च जलाए आता हुआ दिखाई दिया.

'जल्दी चलो, ट्रेन चलने वाली है, आपके लिए ही रुकी हुई है'. - यह वही उन दो में से एक व्यक्ति था जो ट्रेन के दरवाजे पर हो रही पिता-पुत्र की टेलीफोन वार्ता का मौन सहभागी था.

तभी उस व्यक्ति के फ़ोन की घंटी बजी – दूसरी तरफ उसका वह साथी था जो ट्रेन के ड्राईवर के पास खड़ा था और ट्रेन को रोके हुए था. फ़ोन उठाकर वह बोला – 'इनका फ़ोन तो अभी तक नहीं मिला, पर यह आ रहे हैं २-३ मिनट ट्रेन को और रोक के रखिये'.

इतना सुनते ही हल्कू ने उससे उसका नाम और नंबर लेकर याद करने की असफल कोशिश की. लेकिन इस समय उसके सिर पर ट्रेन के छूट जाने की चिंता सवार थी, इसलिए कुछ भी याद न रख सका.

'अब इतने कम समय में फ़ोन का मिलना मुश्किल है. मैं निकलता हूँ. आपको मिल जाए तो आप पहुँचा दीजियेगा.' - यह कहकर हल्कू प्लेटफार्म की ओर भागने लगा.

आते समय उसे इतनी थकान नहीं हुई थी जितनी अब हो रही थी.

उस समय हल्कू उम्मीद की उड़ान भर कर आया था. लेकिन अब उसके हाथ-पाँव फूल चुके थे. असफलता का वजन उसके सर पर था.

किसी तरह पेट को पकड़े, गिरते-लड़खड़ाते, प्लेटफार्म की तरफ बढ़ा. प्लेटफार्म की धुंधली रौशनी में कोई उसे इशारा करता हुआ दिखाई दिया. मानो यह कहने की चेष्टा कर रहा हो की आराम से आओ, अभी ट्रेन रुकी हुई है.

पास आने पर हल्कू ने देखा कि यह वही दूसरा व्यक्ति था, जिसका साथी टोर्च लेकर उसके पीछे आया था.

उसने हल्कू को सहारा देकर खड़ा किया जो तेज-तेज़ तेज़ हांफ रहा था और पेट को दबाकर अपने दर्द को कम करने की कोशिश कर रहा था.

'ये तो हम रोज़ इस ट्रेन से आते-जाते हैं, ड्राईवर से पहचान है, इसलिए ट्रेन को रूकवा पाए हैं, नहीं तो ५ मिनट से ज्यादा का स्टॉप नहीं है यहाँ'. - वह बोला.

हल्कू ने उन दोनों के नाम और नम्बर लिखने के लिए अपने पर्स से कागज़ ढूंढने की कोशिश की. एक छोटी सी एटीएम की पर्ची उसके हाथ लगी. पास में खड़े एक व्यक्ति के जेब से पेन लेकर उनके नाम व नम्बर लिखे. पता चला दोनों ही शिक्षा विभाग में कार्यरत है. और नागोर जिले की नावां सिटी के एक सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं. उन दोनों को यहीं उतरना था.

सिग्नल हो चूका था. ट्रेन चलने को थी. हल्कू के मन में एक विचार आया क्यों न अपना सामान यहीं उतार दे और फ़ोन लेकर ही जाए. रिश्तेदारी किसी और अवसर पर निभा ली

जाएगी.

लेकिन न जाने क्यों हल्कू का आज इंसानियत पर विश्वास थोड़ा और बढ़ गया था. उसे निश्चय हो गया कि ईश्वर जब ट्रेन रूकवाने की व्यवस्था करा सकता है तो फ़ोन भी ढूँढवा ही देगा. वरना क्यों कोई अजनबी उसके पीछे टोर्च लेकर आता? क्यों कोई ट्रेन रूकवाता? ऐसा भी तो हो सकता है, कि उतरने के बाद भी फ़ोन न मिले, और ट्रेन भी हाथ से निकल जाए.

'मेरे पिताजी भी अंग्रेजी के शिक्षक रहे हैं, और प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत हुए हैं. आपको फ़ोन मिल जाए तो अपने पास रख लेना, मैं आपसे बाद में ले लूँगा. मैं स्वयं आपसे संपर्क कर लूँगा.' – इतना कहकर हल्कू डिब्बे में चढ़ गया. और अपनी सीट पर आकर बैठ गया.

उसकी साँसे अभी भी बहुत तेज़ चल रही थी. आस-पास बैठी सवारियों को किसी गड़बड़ी का हल्का आभास तो हुआ लेकिन किसी ने कुछ पुछा नहीं. अब ट्रेन में कौन, किससे और क्यों पूछने लगा? इतने में ट्रेन चल दी.

पेट को दबाए, हल्कू सिर को पीछे सीट पर टिका कर बैठ गया. और अपनी आँखें बंद कर ली. कोई ५ मिनट बाद उसने अपनी साँसों को संभाला. सामने बैठे युवक को अपनी सारी घटना स्वयं ही सुना दी. फिर उसका फ़ोन लेकर अपने अजनबी मित्रों को फोन किया. उसे पता चला कि उन्हें फ़ोन मिल चूका था.

एक गहरी लम्बी सांस के साथ हल्कू के चेहरे पर प्रसन्नता की लकीरें खींच गईं. और उन दोनों अजनबी मित्रो से जीवन का संबध हो गया. एक का नाम अमृतलाल और दुसरे का प्यारेलाल था.

फिर उसी फोन से अपनी धर्मपत्नी को फ़ोन कर अपने फ़ोन गुम होने और फिर मिल जाने की घटना कह सुनाई. कुछ ही समय में इस घटना की जानकारी परिवार के प्रत्येक सदस्य को मिल चुकी थी.

हल्कू अपनी सीट पर जाकर लेट गया. पर पेट में अभी भी दर्द था, इसलिए सो न सका. अपने फोन को वापिस कैसे प्राप्त करेगा यह विचार करते-करते, आखिरकार उसकी आंख लग गई.

प्रात: के ६ बजे यात्रियों के उतरने का शोर शुरू हुआ.

ट्रेन अहमदाबाद पहुँच चुकी थी.

३

हल्कू की योजना में सिर्फ अहमदाबाद जाना ही न था. अहमदाबाद से वापिस आकर उदयपुर उसे अपने मामाजी के मकान के वास्तु में भी सम्मिलित होना था. फिर मास्टर जी को बांसवाडा ले जाना था. उन्हें अपने एक परम शिष्य की पुत्री के विवाह में सम्मिलित होना था. हल्कू को भी निमंत्रण था. फिर आते समय उसे नावां सिटी होते हुए जाना था. कुल मिलाकर एक बेहद हेक्टिक सेड्युल था.

अहमदाबाद के कार्यक्रम में हल्कू के सबसे बड़े भाईसाहब, भाभीजी, और बच्चे भी आए थे. बड़े भाईसाहब स्वर्ण व्यवसायी थे. भीलवाड़ा में उनका मकान और एक दुकान थी.

गृह प्रवेश का कार्यक्रम हल्कू के मंझले भाईसाहब के ससुर जी ने रखा था. उन्हें सभी सेठजी के नाम से ही पुकारते थे. सेठजी ने सभी रिश्ते-नाते वालों को बुलाया था. वो एक मिलनसाज और व्यवहारिक व्यक्ति थे. समाज में अच्छी पहचान थी. दूर-दूर से लोग आए थे.

समधी होने के साथ-साथ, मास्टरजी से उनकी विशेष मित्रता थी. दोनों एक मिजाज़ के जो थे.

घर को तरह-तरह की लाइटों व फूल मालाओं से सजाया गया था. कई तरह के व्यंजन बनाये गए थे. ५ पंडित मंत्रोचार में भोर से ही लगे हुए थे, जो रात्रि में ही अपनी जगह से उठे.

तीन माले का यह बंगला अपनी किस्मत पर आज मानो इतरा रहा था. हर तरह की साजो सुविधा युक्त इस बंगले में कूल ९ कमरे थे. हर कमरे में अटेच अंग्रेजी लेट्रीन और बाथरूम था. महमानों के लिए सबसे उपरी माले पर दो विशेष कमरे बनाए गए थे. उनमें सुविधा किसी पांच सितारा होटल से कम न थी.

सेठजी मेहमानों को एक-एक कमरे में ले जा जाकर सुविधाओं का अवलोकन करा रहे थे.

‘वाह ठाठ हो तो सेठजी जैसा.’ - कोई उनका गुणगान करते थकता न था.

सेठजी का फ़ास्ट फ़ूड का बड़ा कारोबार था. अकेले अहमदाबाद में उनके बीसियों आउटलेट

थे. लक्ष्मी जी मेहरबान थी. सेठजी स्थूल शरीर के तो थे ही, तारीफ़ सुन कर फूले न समाते थे.

शाम का भोजन कर वापिस जाना तय हुआ. हल्कू के बड़े भाईसाहब अपनी गाड़ी से आए थे. मंझले भाईसाहब भी परिवार सहित अपनी गाड़ी से ही आए थे. वह गुजरात की सीमा पर ही स्थित राजस्थान के एक जिले में रहते थे. एक अर्ध-सरकारी महकमें में कार्यरत थे.

हल्कू ट्रेन से आया था, और मास्टरजी बस से अहमदाबाद पहुंचे थे. मंझली भाभी अपने मैके एक दिन और रूकना चाहती थी. इसलिए भाईसाहब को भी रूकना पड़ा.

अंतत: यह तय हुआ कि बड़े भाईसाहब की गाड़ी में ही किसी तरह एडजस्ट करते हुए चल लेंगे. गाड़ी में सिर्फ एक सवारी और आ सकती था. भाईसाहब ने मास्टर जी को आगे की सीट पर बिठाया और हल्कू को पीछे की सीट पर. हल्कू वैसे भी पतला-दुबला और लचीला नौजवान था. एडजस्ट हो गया.

रास्ता लम्बा था. अभी आधे रास्ते भी न पहुँच पाए थे, कि पीछे बैठी सवारियां - हल्कू की बड़ी भाभी, उनकी बहन, बहन की ३ वर्षीय पौत्री, हल्कू का भतीजा, और हल्कू, बैठने में असहज होने लगे. कभी कमर तो कभी पांव दर्द से कराहने लगे. कम जगह होने के कारण पाँव लम्बे नहीं हो सक रहे थे. ऐसा लग रहा था की घुटने ऐंठ गए हों.

जब इस तरह सफ़र करना मुश्किल हो गया तो यह तय हुआ की हल्कू और मास्टर जी किसी और गाड़ी में आ जाएँ.

सड़क पर साथ ही चल रही दूसरी गाड़ियों को हाथ के इशारे से रोकने का प्रयास होने लगा. कोई पचासेक गाड़ियाँ बगल से गोली की तरह निकल गईं. कुछ पहले धीमी होती, मानो रूक रही हो, पर फिर पास आते ही तेज गति से निकल जाती.

आखिरकार एक टोयोटा क्वालिस आकर रुकी. गाड़ी बिलकुल खाली थी. किराया भाड़ा तय कर, मास्टरजी ने आगे की सीट ली. हल्कू पीछे की सीट पर पाँव फैला कर लेट गया. दो दिन के सफ़र से हल्कू इतना थक गया था कि जब आँख खुली तो उदयपुर आ चुका था.

घड़ी रात के ३:३० बजा रही थी.

सुबह ही मामाजी के मकान का वास्तु भी था.

उदयपुर में ही रह रही अपनी बहन के घर जाकर हल्कू और बाकी सभी सदस्य सो गए.

४

हल्कू की बहन उदयपुर में ही एक कॉलेज में लेक्चरर थी. जब भी हल्कू उदयपुर आता, अपनी बहन के सरकारी क्वार्टर में ही पनाह पाता था. वही उसका अघोषित ठिकाना था. उसका ही क्यों, घर के बाकी सभी सदस्यों का भी उदयपुर में यही एक ठिकाना था. इतने वर्ष उदयपुर में नौकरी करने के बाद भी मास्टरजी उदयपुर में अपना घर नहीं बनवा सके थे. या यूँ कहें बनवाना ही नहीं चाहते थे. सारी कमाई अपने बच्चों की पढ़ाई और परिवार के गुजारे में ही निकल गई. भाइयों ने मिलकर कुछेक वर्ष पहले एक बना-बनाया मकान लिया भी था. कभी उसका भी वास्तु हरख के साथ हुआ था. कई लोग आए थे, पर परिस्थितिवश उसे बेच दिया गया.

अभी दो-एक घंटे की नींद ही हुई थी, कि हल्कू के जीजाजी ने स्कूल जाने के लिए बच्चों को उठा दिया.

'सियाराम-लछमी, शोर मत मचाना, नानाजी और मामाजी सो रहे हैं.' - बहनजी की आवाज़ कानो में पड़ी. वह रसोई बच्चों के टिफिन तैयार कर रही थी. जिस काम को न करने लिए बच्चों को आगाह कर रही थी, वह काम हो चूका था. हल्कू जाग गया.

घड़ी ६:३० बजा रही थी. हल्कू थोड़ा और सोना चाहता था, बिना आँख खोले, करवट बदल ली. दूसरी तरफ मास्टरजी अभी गहन निंद्रा में खर्राटे भर रहे थे.

हल्कू की आँख फिर से लगी ही थी कि धम्म की आवाज के साथ उसकी पीठ पर कुछ गिरा. मानो छत आ गिरी हो. इससे पहले कि हल्कू कुछ संभल पता, दो-चार लात घूंसे चले और आवाज आई – 'आज तुम्हे जिन्दा नहीं छोडूंगा, कालिया.'

यह बहन जी का ४ वर्ष का छोटा बेटा सियाराम था. शक्ल से मासूम, अक्ल से शैतान और बेहद नटखट.

अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने में व्यस्त माता –पिता, अपने बच्चों की शैतानियों को काबू में लाने के लिए टीवी या मोबाइल पर आने वाले कार्टून को भ्रमास्त्र के रूप में इस्तेमाल करते हैं. इससे ज्यादा प्रभावी हथियार आज तक किसी वैज्ञानिक ने नहीं बनाया.

कार्टून देखते बच्चे दिन भर उन्ही किरदारों में बने रहते हैं. उसीका नतीजा था कि खुद को छोटा भीम और बेचारे हल्कू को कालिया समझ कर सुबह-सुबह धो दिया.

खैर, अब हल्कू के थोड़ी और नींद लेने के अरमानों पर छोटे भीम का चाबुक चल चूका था. वह उठ बैठा. उसका आज का कार्यक्रम और भी व्यस्त होने वाला था.

८:३० बजते-बजते बच्चे अपने स्कूल, और बहनजी-जीयाजी अपने-अपने दफ्तर जा चुके थे. बहनजी हमारे लिए चाय नास्ते का इंतज़ाम कर गई थी.

जिदंगी की आपा-धापी व्यक्ति में कई क्षमताओं का निर्माण कर देती है. अपने बाबा के घर, ९-९ बजे तक बिस्तर से न उठ सकने वाली बालिका कब इतनी क्षमतावान और धैर्यवान बन गई, पता ही न चला. एक साथ कई जिम्मेदारियाँ निभाने लग गई. जो चीज़ माँ-बाप और शिक्षक न सिखा सके, समय की मार बड़ी आसानी से सिखा देती है.

हल्कू ने मास्टर जी को उठाया, तैयार हुआ, चाय-नास्ता कर अपने मामाजी की भौतिक प्रगति के गवाह बनने निकल पड़ा. १० बजते-बजते हल्कू और परिवार के बाकी सभी सदस्य भी मामाजी के घर पहुँच गए.

कार्यक्रम सम्पन्न हुआ. भोजन उपरांत यह तय हुआ कि किसी गाड़ी का इंतज़ाम कर हल्कू यहीं से सीधे मास्टरजी को लेकर बाँसवाड़ा जाएगा. हल्कू के पुराने मित्र भी वहां आए हुए थे, जो मास्टर जी से भी परिचित थे. वह किसी की गाड़ी मांग लाए थे. हल्कू ने उनको साथ चलने के लिए राज़ी कर लिया. इस तरह गाड़ी का इंतजाम भी हो गया.

गाडी के इंतजाम हो जाने पर मास्टर जी ने अपनी अर्धांगिनी को भी साथ ले चलने की जीद की. न चाहते हुए भी वह साथ हो ली. हल्कू गाड़ी चलाने में स्वयं को माहिर समझता था. हालांकि परिवार के बाकि सदस्यों की राय इसके इतर थी. हल्कू ने स्टीयरिंग संभाला, सभी गाड़ी में सवार हुए और चल दिए - एक तीसरी यात्रा पर.

बाँसवाड़ा कोई १०० मील दूर था. सायं ७ बजते-बजते गाड़ी वहां पहुच गई.

मास्टरजी को देखते ही उनके परम शिष्य, तोताराम, उनके चरणों में लौट गए. वह मास्टरजी को बहुत मानते थे. तोताराम एक नामी सीमेंट कंपनी में जनरल मेनेजर के ओहदे पर थे.

एक बड़े ओहदेदार व्यक्ति के किसी बुजुर्ग के चरणों में यूँ गिर जाना, कलियुग में अचरज की घटना ही थी. सभी मेहमानों की दृष्टि यकायक इसकी और टिक गई.

तोतारामजी की पत्नी, उनके भाई और बाकी परिवार वालों ने उन्हें घेर लिया. तोताराम जी ने सबका परिचय कराया. उनके एक भाई अमेरिका के फिलेडेल्फिया में गवर्नर दफ्तर में कार्यरत थे तो दुसरे भाई एक दूसरी बड़ी सीमेंट कम्पनी में बड़े ओहदे पर थे. कुल मिलाकर घर के सभी सदस्य उच्च शिक्षित और वेल सेटल्ड थे.

तोतारामजी अक्सर मास्टरजी के घर आया करते थे, विशेषकर गुरुदक्षिणा के मौके पर –

अपने गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करने. वैसे तो तोताराम स्वयं होनहार थे, पर अपने परिवार की बुलंदियों में मास्टरजी का विशेष योगदान मानते थे. इसलिए उनका सम्मान करते थे.

कोई ५० वर्ष पहले मास्टरजी की पोस्टिंग उनके गाँव में हुई थी. उन दिनों उनके स्कूल में अंग्रेजी का कोई अध्यापक न था. मास्टरजी एक इमानदार और सख्त अध्यापक थे. उस ज़माने में लड़को को बेंत से मारने पर मारसाबों को जेल नहीं हुआ करती थी. मार खाने के बाद भी लड़कों के दिलों में मारसाबों के लिए इज्जत कम नहीं हो जाती थी. मास्टरजी खूब दिल लगाकर पढ़ाते थे. लेकिन सख्त इतने कि कोई उद्दंडता उनकी बरदास्त से बाहर थी. इसलिए सबको उनका खौफ रहता था.

राम-भरत मिलाप सम्पन्न होने के बाद सबने नाना प्रकार के व्यंजनों का लुत्फ़ लिया और पुन: उदयपुर के लिए विदा ली. रात्रि के कोई १२:००-१:०० बजे उदयपुर पहुंचे.

मास्टरजी व उनकी अर्धांगिनी इस यात्रा से बहुत थक गए थे. पर खुश थे.

उन्हें खुश देखकर हल्कू के मन में भी एक आत्म-संतोष हुआ, ऐसा लगा मानो कोई कर्ज़ा कम हुआ हो.

हल्कू को सुबह ६:०० बजे की ट्रेन पकड़नी थी. अपना मोबाइल प्राप्त करने के लिए उसे अगली यात्रा पर निकलना था. इसलिए ५:०० बजे का अलार्म लगाकर तुरंत सो गया.

ठीक ५:०० बजे अलार्म बजा. नींद में ही हल्कू ने उसे बंद कर दिया. ‘पांच मिनट में उठता हूँ’, सोचकर वह फिर लेट गया. थकन इतनी थी कि उसे फिर गहरी नींद आ गई.

दुबारा नींद खुली तो घड़ी ७:०० बजा रही थी. जिस ट्रेन से उसे जाना था वह ट्रेन निकल चुकी थी.

५

आज हल्कू को अपना मोबाइल लेकर दिल्ली पहुंचना था. पर ट्रेन छुट चुकी थी. नावां सिटी पहुँचने के लिए ट्रेन सबसे सुविधाजनक माध्यम होती. उदयपुर से नावां सिटी के लिए कोई सीधी बस नहीं थी. हालांकि, दो-एक बार बस बदल कर पहुंचा जा सकता था.

अधिक समय नष्ट न कर हल्कू ने बस से ही निकल जाने का निश्चय किया. निकलने से पहले वह अपनी भाभीजी का मोबाइल फ़ोन मांग लाया था, ताकि संपर्क करने में सुविधा हो. बस स्टॉप पहुँच कर उसने जयपुर के लिए बस ले ली.

उदयपुर व जयपुर के मध्य एक बढ़िया हाईवे बना हुआ है. फिर भी बस से जयपुर तक का सफ़र कोई १० घंटे का था. ट्रेनों की और बात है, बस अपना समय लेती ही है.

गूगल मैप में देखकर हल्कू ने जयपुर से पहले मोखमपुरा नाम की एक छोटी सी जगह पर उतरने का निश्चय किया. किसी ने बताया की यहाँ से नावां सिटी लिए बस मिल जाती है. अलग-अलग कई स्टॉप पर रूकते-रूकाते बस कोई सायं के ६:००-६:३० बजे उस स्टॉप पर पहुंची. हल्कू वहीं उतर गया और अगली बस की राह देखने लगा.

लगभग २ घंटा इंतज़ार के बाद, एक बस आई. पता चला यह आखिरी बस थी. हल्कू ने ईश्वर का धन्यवाद किया और बस में चढ़ गया. खचाखच भरी बस के पीछे की तरफ उसे सीट मिल गई.

आखिरी सीट से शराब की दुर्गन्ध आ रही थी. शायद यही कारण था कि भारी भीड़ होने के बाद भी उसे वहां सीट मिल गयी. बस ने रफ़्तार पकड़ ली.

हाईवे से उतर कर बस अब ग्रामीण सड़कों पर चल रही थी. यह रास्ता भी ठीक-ठाक ही लग रहा था. उसे लगा की गूगल मैप द्वारा बताए समय अनुसार एक घंटे में वह नावां सिटी पहुँच जाएगा. फिर फ़ोन प्राप्त करते ही वापिस पास ही के स्टेशन से जयपुर के लिए ट्रेन पकड़ लेगा. यही गणित लगाकर आते समय ही उसने आगे का ऑनलाइन टिकट बुक करा दिया था.

कुछ दूरी पर जाकर ठीक-ठाक लग रही सड़क समाप्त हो गई. बस अब एक टूटी-फूटी व

उबड़-खाबड़ सड़क पर चल रही थी. मालूम करना मुश्किल था कि सड़क में गड्डे थे या गड्डों में सड़क. जगह-जगह निर्माण कार्य के लिए सड़क के दोनों तरफ बालू और कंक्रीट के ढेर लगे हुए थे, जो वाहनों की आवाजाही के कारण सड़क पर बिखर गए थे.

चारों तरफ गुप्प अँधेरा हो चूका था. समय तेज़ गति से भाग रहा था. सफ़र और मुश्किल होता जा रहा था.

हल्कू के मन में कई अनिश्चितताएँ घर करने लगी. आज समय पर पहुँच पाएगा भी या नहीं? आगे वाली ट्रेन भी छूट गई तो क्या होगा? और अब भाभीजी वाले मोबाइल फ़ोन की बैटरी भी ख़त्म होने को आ रही थी.

बस की धीमी गति, चारों तरफ गुप्प अँधेरा, बगल में बैठे शराबी, और ख़त्म होती बैटरी ने उसे बेचैन कर दिया.

हल्कू इन विचारों में खोया हुआ था ही कि अचानक ड्राईवर ने जोर से ब्रेक लगाया. खन्न की आवाज हुई. ऐसा लगा मानो बस का पहिया टूट कर अलग हो गया हो. अंत में किसी भारी चीज़ से टकरा कर रूक गई.

पता चला, एक गाय बस के सामने आ गई थी. चालक नियंत्रण न रख सका. उसने ब्रेक लगाकर बस को रोकने की कोशिश जरुर की किन्तु बस गाय से टकरा ही गई. सड़क पर खून ही खून बहने लगा. मूक जानवर सड़क के एक कौने में पड़ा कराह रहा था. उसकी टूटती साँसे चहुँ और तेज़ी से हो रहे विकास पर मानो प्रश्नचिंह लगा रही थी. बस में सवारियों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं थी.

ड्राईवर ने बस को थोड़ा पीछे लेकर गाय के बगल से निकाला और आगे बढ़ गया. जैसे-तैसे कर गाड़ी गंतव्य तक पहुंची. हल्कू दरवाजे पर आ गया. दरवाजे पर आने पर पता चला शराबी सिर्फ आखिरी सीट पर ही नहीं, ड्राईवर और खलासी की सीट पर भी बैठे हुए थे. सरकारी व्यवस्थाओं की यह दुर्दशा देखकर हल्कू को बहुत अफ़सोस हुआ.

हल्कू ठीक वहीँ उतर गया जहाँ उसके अजनबी मित्र अमृतलाल ने बताया था. कुछ ही मिनटों में अमृतलाल उसे लेने वहाँ आ गए.

फ़ोन की बैटरी आखिरी साँसे ले रही थी. रात के १० बज चुके थे. सुबह ५ मिनट के आलस्य का ही यह परिणाम था कि जो सफ़र ट्रेन से मात्र पांच घंटे का था, कोई १३ घंटों में पूरा हुआ. अमृतलाल हल्कू को लेकर अपने कमरे पर गए. प्यारेलाल भी वहीँ मौजूद थे. मुलाकात हुई. जाते ही भाभीजी वाला फ़ोन चार्जिंग में लगाया.

दोनों मित्र इसी कमरे में छात्रों की भांति ही एकाकी जीवन व्यतीत कर रहे थे. सादगी से भरा यह कमरा, हल्कू को अपने छात्र जीवन की याद दिला गया.

पहले थोड़ी बातचीत हुई और फिर विस्तृत परिचय हुआ. हल्कू ने भी अपना सारा यात्रा वृतांत कह सुनाया.

हल्कू ने अपने बैग से दो पैकेट सूखे मेवे निकाल कर दोनों को दिए. निकलने से पहले हल्कू ने उदयपुर से ही दो पैकेट सूखे मेवे ले लिए थे. उसने सोचा उन दोनों की इमानदारी का मूल्य तो क्या चूका सकेगा. इसलिए यही ले जाना उचित समझा. आज के ज़माने में मोबाइल या पर्स मिलने पर कौन लौटाता है?

अमृतलाल ने फोन निकाल कर हल्कू को सुपुर्द कर दिया. फ़ोन की बैटरी पुरी चार्ज थी. फ़ोन को हाथ में लेकर उसे अत्यंत प्रसन्नता हुई. ऐसा लगा मानो अपना खोया खज़ाना मिल गया हो. मैले में खोए हुए अपने बालक के पुन: मिल जाने पर माँ-बाप को भी शायद इतनी ही खुशी होती होगी.

फ़ोन मिल जाने का समाचार, उसी फ़ोन से, हल्कू ने सबसे पहले मास्टरजी और फिर अपनी पत्नी को सुनाया. मास्टरजी ने भी अमृतलाल व प्यारेलाल से बात कर उनका धन्यवाद दिया.

रात के ११:०० बज चुके थे. दोनों ने हल्कू को रात वहीँ रूक जाने का आग्रह किया. परन्तु हल्कू अपनी पत्नी से रविवार तक लौट आने का वादा कर चुका था. इसलिए जल्दी ही घर पहुँच जाना चाहता था.

उसने सोचा किसी तरह यहाँ से जयपुर जाने का साधन मिल जाए, फिर वहां से दिल्ली जाने के तो सैंकड़ो साधन उपलब्ध थे.

मोबाइल में वह सारे विकल्प देख चूका था. चिंता सिर्फ जयपुर तक पहुँचने की थी.

गूगल मैप के अनुसार वहाँ से कोई २ घंटे का रास्ता ही था जयपुर का. और उसके पास अभी पुरे साढ़े-चार घंटे बाकी थे. वह आश्वस्त था कि वह समय पर जयपुर अवश्य पहुँच जायेगा.

जयपुर से रात ३:३० बजे की ट्रेन वह पहले ही बुक करा चुका था जिसे वह किसी भी परिस्थिति में छोड़ना नहीं चाहता था. नावां सिटी में भी एक रेल्वे स्टेशन था. हो सकता है जयपुर तक की कोई पैसेंजर ट्रेन ही मिल जाए. यह सोच कर उसने विदा ली.

स्टेशन कुछ दुरी पर ही था.

थोड़ी दूर दोनों उसे छोड़ने आए. फिर हल्कू पैदल ही उनके बताए रास्ते पर चल दिया.

६

५ मिनट में ही हल्कू स्टेशन पर पहुँच गया. जिस ट्रेन के लेट होने की उम्मीद में वो जल्दी-जल्दी स्टेशन पहुँचा, वह कुछ देर पहले ही जा चुकी थी. हल्कू ने विचार किया - ये ट्रेनें कब समय पर चलने लगी?

ऐसा अक्सर होता है कि जब व्यक्ति लेट होता है तो उस दिन ट्रेन अवश्य समय पर आती है, चाहे वह पैसेंजर ट्रेन ही क्यों न हो.

इस समय रेल्वे स्टेशन पर भी गिनती के ही लोग थे. किसी ने बताया कि अगली ट्रेन दो घंटे बाद है. ३.५ घंटे में हल्कू को जयपुर पहुंचना था. इतना समय नहीं था की वह ट्रेन का इंतजार करता.

रात के सवा ग्यारह हो चुके थे.

यह पूस का सर्द महिना था. आते समय सर्दी कम थी या फ़ोन प्राप्ति की ख़ुशी में उसे सर्दी का एहसास ही नहीं हुआ था. पर अब उसे सर्दी महसूस होने लगी. अपने बैग से अपना स्वेटर निकाल कर पहन लिया.

किसी ने बताया की पास ही के एक बाय-पास चौराहे से कोई न कोई साधन मिल जाएगा. ग्रामीण इलाका है, इस समय बस या टैक्सी मिलना तो असंभव है. लेकिन यहाँ से दूध-सब्जी वगैरह जयपुर ले जाने वाली छोटी-बड़ी माल-गाड़ियाँ मिल सकती है. बिना देरी के हल्कू स्टेशन से बाहर निकल गया.

बाहर निकला तो चहुँ और सन्नाटा पसरा था. कुछ आवारा कुत्ते स्टेशन के दरवाजे के कौने में दुबके हुए थे. मुख्य द्वार की रेलिंग के पास कचरे का ढ़ेर लगा हुआ था. दो-चार सांड उसी ठेर के चारों ओर बैठे जुगाली कर रहे थे. शायद कचरे के ढ़ेर की रक्षा में नाईट ड्यूटी पर थे. उन पर सर्दी का कोई असर नहीं जान पड़ता था.

हल्कू अपने ट्राली बैग को सड़क पर चलाता हुआ चौराहे की दिशा में निकल पड़ा. जैसे-जैसे आगे बढ़ा तो स्टेशन से आती रौशनी भी मंद होती चली गई.

सड़क किनारे खम्भे तो खड़े थे, पर उन पर से बल्ब नदारत थे. स्टेशन शहर से थोड़ा बाहर

था, इसलिए यहाँ ज्यादा बसावट नहीं थी. जो कुछ घर बने भी थे, अधिकतर की लाइटें बंद थी. बीच-बीच में एकाध झोपड़ियाँ जरुर थी, जिनमें कहीं-कहीं बल्ब टिमटिमा रहे थे. ऐसा लग रहा था मानो इस सुनसान सड़क को रोशन करने का जिम्मा इन्हीं गरीब झोपड़ियों ने उठाया हुआ था.

हल्कू अभी चल ही रहा था कि अचानक सड़क रौशनी से आबाद हो गई. पीछे से एक ट्रक आ रहा था. हल्कू ने हाथ दिया. पास आते-आते ट्रक की गति धीमी हुई. आँखों में उम्मीद जगी, लगा शायद जयपुर जा रहा हो, बैठा ले. हल्कू ने इशारे के साथ आवाज़ दी - जयपुर... जयपुर. ट्रक के सहायक ने खोलते-खोलते खिड़की वापिस बंद कर ली. ट्रक की गति बढ़ी और कुछ ही पलों में वह आँखों से ओझल हो गया. शायद वह किसी और ठिकाने जा रहा था. ट्रक के जाते ही, अंधकार ने सड़क पर फिर अपना अधिकार जमा लिया.

रौशनी का जीवन क्षणिक था, अंधकार ही जगत का परम सत्य जान पड़ा.

इस सत्य को स्वीकार कर, हल्कू भी ट्रक के पीछे आगे बढ़ चला. बीच-बीच में थोड़ी देर के लिए सड़क रौशन होती थी. कूछेक वाहन पीछे स्टेशन पर आकर ही रूक जाते थे. लेकिन हर उभरती रौशनी के साथ उसकी उम्मीद भी परवान चढ़ती और फिर मंद होती रौशनी के साथ ही समाप्त हो जाती थी. वह मुड़-मुड़ कर देखता था. हर पास में आती हुई गाड़ी को वह हाथ देता. २-३ कारें भी इस दौरान वहां से गुजरी. रोकना तो दूर, किसी ने अपनी गति भी धीमी न की. कोई करे भी क्यों? सबको डर रहता है. अखबार सहायता मांग कर धोखा देने वाली ख़बरों से भरे रहते हैं. फिर रात के इस समय किसी भी अनजान व्यक्ति को लोग उसी नज़रों से देखते हैं. भरोसे में लेकर धोखा देने वाली घटनाएं इंसानियत से विश्वाश उठा देती है. और जरूरतमंद भी उस मदद से वंचित रह जाते हैं. गेहूं के साथ पिसना ही घुन की किस्मत है.

इन्हीं विचारों में खोया हल्कू तेजी से आगे बढ़ रहा था. उसे चलते-चलते बहुत समय हो गया था. पिछले कई मिनटों से कोई गाड़ी नहीं गुजरी थी. हालाँकि बताने वाले ने इसे ५ मिनट का ही रास्ता बताया था, पर हल्कू को लगा जैसे वह चार-पांच मील से कम नहीं चला था.

आखिर में वह उस चौराहे पर आ पहुँचा.

चौराहे पर भी कोई लाइट न थी. रेलवे लाइन के ऊपर बने एक फ्लाईओवर पर लगी लाइटों से हल्की-हल्की रौशनी यहाँ तक पहुँच रही थी.

हल्कू अपने ट्रोली बैग को छोड़ सड़क किनारे इंतज़ार करने लगा. ट्राली बैग जब जमीन पर छोड़ा तो एहसास हुआ ही, जिस हाथ में वह बैग था, ठण्ड के मारे उसकी उंगलिया मुड़ ही नहीं रही थी. आते समय उनसे अपना दूसरा हाथ तो जीन्स की जेब में रख लिया था, जिससे वह तो ठण्ड से बच गया था. पर यह वाला हाथ बाहर रह गया था. दोनों हथेलियों को आपस में मिलाकर कुछ मिनट रगड़ा. गर्मी पाकर अब वह हथेली, हथेली सी लगने लगी. लक्ष्य प्राप्ति में मगन व्यक्ति अपने तन को भी भुला बैठता है.

घड़ी ११:३० बजा रही थी.

फ्लाई ओवर की धुंधली रौशनी में उसने देखा कि इस चौराहे पर यात्रिओं के बैठने के लिए एक कमरा बना हुआ था. उसके दाएं-बाएँ ५-६ रेहड़ी-खोमचे लगे हुए थे. उनके मालिक उन्हें ठण्ड से बचाने के लिए पुख्ता इंतज़ाम कर गए थे. सभी प्लास्टिक के तिरपालों से ढंके हुए थे और चारों तरफ से कस कर रस्सियों से बंधे हुए थे.

सड़क की दूसरी तरफ एक ढाबा था, जो इस समय बंद था. उसके पास में दो-तीन दूकानें भी थी. ढाबे के सामने एक बड़े से कूड़ेदान में प्लास्टिक की थालियां और कटोरियाँ ठूंस-ठूंस कर भरी हुई थी. कई थाली-कटोरियां कूड़ेदान से बाहर बिखरी हुई थी. अवश्य किसी गाय, बैल या कुत्ते ने इस जूठन से अपने पेट की आग बुझाई होगी.

इन स्तिथियों को देख कर तो ऐसा प्रतीत होता था कि इस चौराहा पर दिन में खूब चहल-पहल रहती होगी. हालाँकि इस समय यह यह चौराहा एक बिल्कुल सुनसान जगह थी. जहाँ आदमी तो दूर, किसी जानवर का भी कोई नामों निशान न था.

कई देर से चौराहे का मुआयना कर रहे हल्कू को अब तेज़ ठण्ड लगने लगी. अपने ट्राली बैग से उसने एक जैकेट निकाला और स्वेटर के ऊपर ही पहन लिया. ठण्ड से थोड़ी राहत मिली.

स्वयं को व्यस्त रखने के लिए हल्कू सड़क पर ही चहल कदमी करने लगा. वह बार-बार चारों दिशाओं में नजर डालता. कहीं से कोई आवाज़ आती तो तुरंत ही उसका ध्यान उस तरफ चला जाता.

उसे यहाँ आए कम से कम १५-२० मिनट हो चुके थे. अब तक कोई भी गाड़ी नहीं आई थी. चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था. अंधकार का साम्राज्य और अधिक प्रबल हो चूका था. ठण्ड निष्ठुर हो चली थी. ठिठुरन बढ़ गई थी. उसे अलाव जलाने की इच्छा हुई. लेकिन उसके पास माचिस भी न थी. उसे बीड़ी पीने की आदत न थी.

घड़ी में १२ बजने वाले थे. जयपुर से ट्रेन छूटने में अब भी साढ़े तीन घंटे बाकी थे. लेकिन अब अनेक आशंकाए उसके मन में घर करने लगी. अब तक जो अडिग था, वह विश्वास डिगने लगा. उसे अमृतलाल और प्यारेलाल का आज रात वहीं रूक जाने वाला आग्रह याद आया. हल्कू को लगा कि वह गलती कर चूका है.

यह विचार करता हुआ हल्कू फिर चहल-कदमी करने लगा. लेकिन अब उसकी चहल कदमी में पहले वाला इत्मिनान न था, बैचेनी थी.

‘अगर रात भर कोई साधन न मिला तो? तो क्या, स्टेशन जाकर किसी बेंच पर सो जाएगा? इसी बस स्टैंड के कमरे में भी रात गुजर सकती है? या फिर वापिस अपने मित्रों अमृतलाल और प्यारेलाल की शरण लेगा. नहीं, नहीं! अब वापिस जाना ठीक नहीं रहेगा. वो दोनो भी अब तक सो चुके होंगे. उन्हें अब परेशान करना उचित नहीं होगा.’ – हल्कू के मन में विचारों का सैलाब उमड़ने लगा.

किसी मोटर के आने की आवाज से उसका ध्यान भग्न हुआ. शायद कोई मोटर साइकिल थी. उसकी हेड-लाइट जल तो रही थी, पर उसमें इतनी ताकत न थी कि अँधेरे को चीर कर उस तक पहुँच पाती. जैसे-जैसे गाड़ी आगे बढ़ रही थी, हेडलाइट की रौशनी और इंजन की आवाज़ दोनों ही तेज़ होती जा रही थी.

हल्कू पहले से ही हाथ देकर खड़ा था. मोटरसाइकिल वाले की नज़र उस पर पड़ी. वह रूक गया.

अच्छे डील-डौल का कोई गठीला जवान जान पड़ता था. सिर में हेलमेट पहनी हुई थी. हाथों में दस्ताने थे. पैरों में जुते थे. मूंह रूमाल से ढंका हुआ था. पुरे शरीर पर आँखे ही एकमात्र ऐसा अंग था जो प्रत्यक्ष पूस की इस सर्दी का सामना कर रहा था. लेकिन अँधेरा होने के कारण से आँखों के हाव-भाव जानना भी नामुमकिन था. ऊपर स्वेटर और नीचे शायद जीन्स और जुते पहने हुआ था. अंधेर में पता लगाना मुश्किल था की किस कपड़े का रंग क्या था. अँधेरे में सब काला ही जान पड़ता था.

हल्कू - 'जयपुर जाना है. घंटे भर से कोई साधन नहीं मिला है. आप उसी तरफ जा रहे हैं क्या? मुझे ३:३० बजे की ट्रेन पकड़नी है.'

'हां, मैं जयपुर ही जा रहा हूँ. आजा बैठ ले.' – बाइक सवार बोला.

उसकी आवाज़ कड़क और कर्कश थी. लेकिन इस समय इस सुनसान चौराहे को छोड़ जयपुर पहुँचने के अतिरिक्त दूसरा कोई ख्याल उसके मन में नहीं आया.

बाइक पर बैठने के बाद और अधिक ठण्ड लगेगी, इसलिए उसने अपने ट्राली बैग से गरम टोपा, और कम्बल निकाल लिया. सिर पर टोपा लगाकर और कम्बल को लपेटकर वह बाइक पर सवार हो गया.

७

बाइक पर सवार होकर हल्कू को इत्मिनान हो गया कि दो-ढाई घंटे में वह जयपुर पहुंचकर ट्रेन अवश्य ही पकड़ लेगा. फिर ७-८ बजे तक दिल्ली पहुँच जाएगा. और सुबह की चाय वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ ही पीएगा.

हल्कू अति आत्म-विश्वाशी नौजवान था. उसे पूरा भरोसा था कि जो लगातार चलते रहते हैं, वो निश्चित मंजिल पाते हैं. कछुए और खरगोश की कहानी उसने बचपन में पढ़ी थी. धीमी गति वाला कछुआ भी लगातार चलकर दौड़ जीत लेता है लेकिन बीच राह में रूक जाने के कारण खरगोश तेज़ धावक होने के बावजूद भी हार जाता है.

बाइक चल पड़ी. बाइक के चलते ही उसे ठण्ड का एहसास होने लगा. बैठने से पहले ही टोपी और कम्बल निकालने के अपने दूरदर्शी फैसले पर उसे गर्व हुआ.

लेकिन जैसे-जैसे बाइक की गति बढ़ी, उसे और ठण्ड का आभास होने लगा. तेज़ और सर्द हवाएं उसके कपड़ो को पार कर चमड़ी तक पहुँचने लगी. हालांकि, बाइक की गति कोई २०-३० मील प्रति घंटा से ज्यादा न थी. इससे दुनी गति से तो वह स्वयं रोज़ बाइक चलता ही था. लेकिन आज यह गति उसे तूफ़ान से भी ज्यादा तेज़ लग रही थी. ठण्ड का असर कम हो इसके लिए वह चाहता था कि बाइक और धीरे चले. पर समय पर पहुँचने के लिए यह गति भी कम थी. इन्ही विरोधाभाषी विचारों के मध्य उसने चुप रहना ही उचित समझा.

'सही सलामत पहुँच गए तो सुबह की न सही शाम की चाय अपने घर पर पी लेगा. ठण्ड में मर जाने से तो यही अच्छा होगा. ' - उसने सोचा.

उसके दूरदर्शी विचार अब तत्कालदर्शी होने लगे थे.

बाइक सवार भी शायद यही विचार कर रहा था. वह बीच-बीच में गाड़ी की गति बढ़ाने का प्रयास भी करता था. लेकिन फिर स्वत: गति कम हो जाती थी. बाइक चलाने वाले को हवा की मार भी पहले और ज्यादा तेज़ लगती है.

तेज़ हवा के कारण थोड़ी देर में ही हल्कू का कम्बल उसके शरीर पर से ठीला पड़ने लगा.

दाएं हाथ में ट्रोली बैग था, जिसे उसने अपने दायीं जंगा पर टिका लिया था. बाएँ हाथ से कम्बल के दो सिरों को ठुड्डी के नीचे कस कर पकड़ा हुआ था. लेकिन हवा की तेज़ गति से कम्बल के बाकी हिस्से शरीर से अलग होकर लहराने लगे थे. उसके पास दस्ताने नहीं थे. मुहं तो बाइक सवार के पीछे छुपा लिया था. पर उसके दोनों नंगे हाथ सर्द हवा के थपेड़े सहन कर रहे थे. ऐसा लग रहा था कि सर्दी आज उसकी चमड़ी को पार कर हड्डियों में प्रवेश कर जाएगी.

अपने हाथों की सुरक्षा का विचार करके उसने कम्बल के सिरों को दांतों मे दबाकर बाएं जेब से रूमाल निकाला. और फिर उसे किसी तरह दाएं हाथ की हथेली पर लपेट लिया. और बाएं हाथ से कम्बल को फिर से ठुड्डी के नीचे दबा लिया.

दाएं हाथ ने बाएं हाथ के इस परोपकारी कृत्य पर आभार व्यक्त किया. उसे अब पहले से बेहतर महसूस हो रहा था. हथेली हथेली सी लगने लगी.

हल्कू कभी बाएं हाथ को कम्बल के अन्दर लपेटने की कोशिश करता, कभी कम्बल को सँभालने की तो कभी अपनी ट्राली को ठीक करता, जो किसी स्पीड ब्रेकर अथवा गड्ढे के आने पर अपनी जगह से खिसक जाती थी.

एक ही अंग पर कई देर टिके रहने के कारण उसके दाएं हाथ और दायीं जंगा में दर्द होने लगा.

सर्दी में खून गाढ़ा हो जमने की स्तिथि में पहले ही आ चूका था. जंगा पर ट्राली रखी होने की वजह से शरीर के ऊपरी और निचले हिस्से के बीच खून का बहाव रूक सा गया था.

उसने ट्राली का स्थान बदलना चाहा. किसी तरह उसे बायीं जंगा पर रखा. इस क्रिया में बाइक का संतुलन थोड़ा बिगड़ा.

बाइक सवार ने हेलमेट का शीशा ऊपर किया. गर्दन पीछे घुमाई और कर्कश आवाज़ में बोला - ‘भाई चुपचाप बैठा नहीं जा रहा, क्यों डोल रहा है?’

कठोरता के साथ साथ उसकी आवाज़ में इस बार एक तीखी दुर्गन्ध भी थी. बाइक सवार ने शराब पी रखी थी.

इस सुचना का पटाक्षेप होने पर हल्कू के मन में कई आशंकाएं पलने लगी. उसे अपनी गलती का एहसास होने लगा. शाम की चाय अपने घर पीने का विचार अब कभी पूरा न हो सकने वाला सपना लगने लगा.

उसका अति-आत्मविश्वाशी मन अब डगमगाने लगा था. विचारों का सैलाब उमड़ पड़ा. क्यों नहीं उसने अमृतलाल की बात मान ली? अगर वह रूक गया होता तो इस मुसीबत में क्यों फंसता? क्यों उसने आज सुबह अलार्म बंद कर ५ मिनट और सोने का आलस्य किया, जिस कारण उसकी ट्रेन छूट गई? अगर वह ट्रेन पकड़ लेता तो अब तक दिल्ली पहुँच गया होता. उसे अपने आप से घृणा होने लगी.

घर वाले सभी उसे बड़ा बहादुर और दिलेर मानते थे. वह था भी. आज उसकी परीक्षा की घड़ी थी.

उसका भयग्रस्त मन भयानक कल्पनाएँ करने लगा. उसने देखा सुबह के अखबार के मुख प्रष्ट पर एक खबर प्राथमिकता से छपी हुई है – जयपुर-जोबनेर मार्ग पर एक अज्ञात युवक का शव मिला. फोटो भी छपा है. युवक का मुंह विक्षिप्त किया हुआ है. प्रथम दृष्टया मामला लूट के बाद हत्या का लगता है. कोई भी कागज़, मोबाइल या घड़ी नहीं मिली थी, जिससे उसकी पहचान हो सके. उसकी जेब से रोडवेज बस का एक टिकट अवश्य मिला है जो उदयपुर से जयपुर तक का था. लेकिन जयपुर जाने वाला युवक यहाँ कैसे और क्यों पहुंचा. पुलिस यह गुत्थी नहीं समझ पा रही है. पुलिस इसे किसी प्रेम-प्रसंग के मामले से जोड़कर भी देख रही है. शायद वह अपनी प्रेमिका से मिलने यहाँ आया हो. पुलिस पुरे मामले की तहकीकात कर रही है.

हल्कू इन विचारों में खोया हुआ ही था कि बाइक सवार ने एक सुनसान जगह पर बाइक रोक ली.

हल्कू का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा. उसे निश्चय हो गया कि अब आखिरी जंग लड़ने का समय आ गया है. उसका दिमाग कंप्यूटर की गति से दौड़ने लगा. स्वयं को बचाने के उपाय खोजने लगा.

इसके पास पिस्तौल हुई तो क्या होगा? और अगर चाकू निकाला तो वह क्या करेगा? उसने अपने ट्राली बैग को मजबूती से संभाला. स्वयं को बचाने ले लिए यही एक मात्र ढ़ाल उसके पास थी.

स्वयं को सम्भालते हुए बोला. ‘क..क... क्या हुआ?’

‘कुछ नहीं, बहुत जोर की पेशाब लगी है.’ – बाइक सवार बाएं हाथ की छोटी ऊँगली दिखाते हुए बोला.

‘अच्छा’, कहकर हल्कू बाइक से नीचे उतर गया. लेकिन वह सावधान था, और उसकी नज़र बाइक सवार पर ही थी. उसने ट्रोली बैग को अभी भी कस कर पकड़ा हुआ था.

बाइक सवार सड़क किनारे खड़े होकर पेसाब करने लगा. लेकिन हल्कू की नज़र उसी पर टिकी हुई थी. अँधेरा काफी था, पर बाइक की लाइट में वह अब भी हाथ-पैरों की गतिविधि भांप सकता था. धीरे-धीरे सरक कर वह बाइक की दूसरी तरफ आ गया था.

बाइक सवार पेसाब करके वापिस आ गया और बाइक पर बैठकर बोला – ‘चलो’.

हल्कू ने अपनी कम्बल संभाली, और चुपचाप पीछे बैठ गया. बाइक फिर से फर्राटे भरने लगी.

उसका दिल अब भी जोर-जोर से धड़क रहा था. अपनी प्राण रक्षा के सामने पूस की यह कड़कड़ाती ठण्ड अब उसके लिए सबसे बड़ी चुनोती न थी.

हल्कू के मन में अब भी डर बैठा हुआ था. उसने सोचा कि कम से इस बाइक सवार की कोई जानकारी ले लेनी चाहिए.

उसने कंपकंपाती आवाज़ में पुछा – 'क्या नाम है भैया?'

बाइक रफ़्तार में थी. बर्फीली पवन को काटते हुए आगे बढ़ रही थी. इसलिए शायद बाइक सवार ने हल्कू की आवाज नहीं सुनी.

हल्कू ने हिम्मत जूटा, आगे की ओर झुक कर फिर पुछा - 'क्या नाम है भैया, क्या करते हो?'

'मेरा नाम? मेरा नाम कालूलाल गुज्जर है. सेल्स का काम करता हूँ. जिओ के सिम बेचता हूँ.' – उसने ऊँची आवाज में जवाब दिया. उसकी आवाज़ में भी कम्पन्न था. तेज़ बर्फीली हवाओं के बहाव का हल्कू से पहले वही सामना कर रहा था.

नाम सुनकर हल्कू का डर और बढ़ गया.

'इतनी रात को कैसे जा रहे हो, कल रविवार की छुट्टी नहीं है क्या?' – हल्कू ने फिर पुछा.

'बॉस ने बुलाया है. कुछ जरुरी काम है.' - यह कहकर उसने बाइक की गति बढ़ा दी. शायद और कुछ कहना सुनना नहीं चाहता था.

हल्कू को उसकी बातों पर विश्वास तो नहीं आया पर उस पर तरस अवश्य आया. एक सामान्य सी नौकरी के लिए व्यक्ति कितने संघर्ष करता है. उसकी तो विशेष परिस्थिति थी, पर ये नौजवान अपने रोजगार के लिए १०० मील से ज्यादा इस सर्द, बर्फीली और अँधेरी रात में बाइक पर चल रहा है. शायद संघर्ष का ही दूसरा नाम जिंदगी है.

हल्कू को इस वक्त और पूछताछ करना उचित नहीं लगा. वह चुपचाप बैठा रहा. उसे हाड़कंपाती ठण्ड का फिर से एहसास होने लगा.

कुछ देर बार कालूलाल ने बाइक एक ढाबे पर रोक दी. ढाबे के बाहर दो-तीन व्यक्ति बैठे अलाव ताप रहे थे. शायद ट्रक ड्राईवर थे. जिनके ट्रक सड़क किनारे लगे हुए थे.

कालूलाल ने अपना बैग बाइक के हैंडल पर लटकाया और अलाव के पास चला गया. दस्ताने उतार कर अपने हाथ सेंकने लगा. और ट्रक ड्राईवरों से ऐसे बातचीत करने लगा, जैसे इनसे पहले से ही परिचित हो.

हल्कू थोड़ी देर बाइक के पास ही खड़ा रहा. ठण्ड के मारे उसका सारा बदन कम्पन्न कर रहा था. वह भी अलाव के पास चला आया. २-३ मिनट हाथ सेंकने के बाद कालूलाल ने अपना बैग लिया और ढाबे के अन्दर चला गया.

हैंडल से निकालते समय बैग के अन्दर से बोतलों के टकराने की आवाज़ आई.

हल्कू समझ गया कि अन्दर जाकर वह और पिएगा. हल्कू का डर, जो कि उफान पर जाकर थोडा-थोड़ा शांत होने लगा था, फिर हिलोरे लेने लगा. उसने मन ही मन सोचा – 'खतरा

अभी टला नहीं है.’

८

हल्कू अभी अलाव तापने लगा ही था कि ढाबे के अन्दर से एक लड़का आया और बोला– 'चाय बनाऊ साब'.

'बना दो – एक बढ़िया सी और कड़क.' ड्राईवरों की तरफ देखकर बोला एक-एक इनके लिए भी बना लाना. दोनों ने हल्कू की तरफ देखा. एक धन्यवाद भरी मुस्कान दी और फिर हाथ सेंकने लग गए.

इसी बीच हल्कू ने अपना ट्रोली बैग खोला और उसमें से अपना थर्मल वियर निकाल लिया. वहीँ खड़े होकर तुरंत अपने उतारे, थर्मल वियर पहन ली, और अपना जींस टी-शर्ट, स्वेटर व जैकेट पहन कर फिर से कम्बल लपेट लिया. थर्मल वियर पहन कर उसे काफी राहत महसूस हुई.

सर्दियों में हल्कू जब भी किसी यात्रा पर जाता, उसकी पत्नी बिना बताए बैग में अंदर पहनने के गरम कपड़े उसके बैग में अवश्य रख देती थी. आज उसे इनकी सदुपयोगिता मालूम हुई. एक माँ और एक सच्ची पत्नी ही आदमी की इन चीज़ों का ख्याल रख सकती हैं. संभवत: वो आने वाली मुसिबतों को पहले ही भांप लेती हैं.

अपने ट्रोली बैग को बंद करके हल्कू वापिस अलाव के पास आकर बैठ गया.

'आपकी तो स्पीड बहुत तेज़ है. २ मिंट में ही आपने तो कपड़े खोल भी लिए, और पहन भी लिए.' – उनमें एक ड्राईवर बीड़ी का धुआं आकाश की ओर उड़ाते हुए बोला.

हल्कू उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा दिया. इस वक्त ज्यादा चर्चा करना उसे उचित नहीं लगा.

चाय बन चुकी थी. लड़का ३ कप चाय ले आया.

चाय की चुस्की लेते हुये ड्राईवर ने पुछा – 'इतनी रात कहाँ जा रहे हैं, साब?'

'जयपुर' – हल्कू को अपने उत्तर को संक्षेप में रखना ही उचित जान पड़ा.

'बाइक पर? जयपुर पहुँचते-पहुँचते तो साब कुकड़े बन जाओगे'. – दूसरा ड्राईवर बोला.

हल्कू ने फिर संक्षेप में अपनी व्यथा कह सुनाई. कैसे उसकी ट्रेन छुटी, कैसे विलम्ब होते-होते उसने बाइक का सहारा लिया और कैसे यहाँ तक पहुँचा.

'३:३० बजे की ट्रेन है और अभी १:३० बज चुके हैं.' – हल्कू ने बताया.

'एक काम करो साब, मेरी पिक-अप आने वाली है. जयपुर सिटी के अन्दर तो नहीं जाएगी पर आपको सिटी के बाहर नाके पर छोड़ देगी. ठण्ड से भी बचाव होगा और सुरक्षित पहुँच जाओगे. इस मोटर साइकल पर कुकड़े बनने से तो अच्छा है.' – वह आगे बोला.

उसकी बातों में सरल मदद करने वाले भाव थे.

हल्कू के पास ज्यादा विकल्प नहीं थे. घड़ी की सुइयां अभी भी उसी रफ़्तार से चल रही थी. और अभी तक कालूलाल बाहर नहीं आया था. आ भी गया तो उसके साथ जाना अब सुरक्षित नहीं था.

उसने मोबाइल में समय देखते हुए पुछा, कितनी देर में आएगी आपकी गाड़ी.

'बस आने ही वाली है, ५-७ मिनट में'. – वह बोला.

हल्कू को थोड़ा इत्मिनान हुआ.

थोड़ी इधर-उधर की बातें होने लगी. पता चला दोनों पास ही के गाँव के रहने वाले थे. उनकी अपनी २-१ छोटी-छोटी माल गाड़िया थी. रोज रात आस-पास के गावों से दूध-सब्जियां जयपुर पहुँचाते थे.

बीच-बीच में हल्कू मोबाइल निकाल कर समय देख रहा था. समय पर स्टेशन पहुँचने की उसकी टूट चूकी उम्मीद फिर से जागृत होने लगी. गूगल-मैप वहाँ से ५० मील दिखा रहा था. कोई एक - सवा एक घंटे का रास्ता जान पड़ता था.

अगर जयपुर के बाहर वाले नाके से तुरंत कोई साधन मिल गया तो १५-२० मिनट में स्टेशन पहुँच जाएगा. जिस ट्रेन में टिकट बुक किया था, वह दूर से आ रही थी. उसके देर होने की सम्भावना भी थी.

१० मिनट बीतने के बाद भी जब पिक-अप नहीं आई तो हल्कू फिर से अधीर होने लगा.

कोई १५-२० मिनट बाद पिक-अप आ गई. हल्कू की आँखों में चमक आई. उसने अपना ट्राली बैग संभाला और तुरंत खड़ा हो गया.

'अरे दो मिंट और इंतज़ार कर लो साब. लड़के को पानी-पेसाब कर लेने दो. मेरा ही लड़का है. नितिन नाम है. आपको छोड़ देगा.' – ड्राईवर बोला.

नितिन एक २०-२२ साल का नौजवान था. उसने उतरते ही ढाबे वाले लड़के को चाय बनाने का इशारा किया और सीधे टॉयलेट की तरफ चला गया. हल्कू के पास कोई विकल्प नहीं था. वह बेमन से बैठ गया और फिर अलाव सेंकने लगा.

कोई ५ मिनट बाद नितिन बाहर निकला, और अपने हाथ सेंकने लगा.

तभी लड़का चाय लेकर आ गया. नितिन चाय पीने लगा.

उधर हल्कू एक-एक क्षण गिन रहा था. उसे एक-एक क्षण घंटे से कम नहीं लग रहा था. जितना इत्मिनान से नितिन चाय पी रहा था, हल्कू उतना ही अधीर होता जाता था.

आखिर उसकी चाय ख़त्म हुई. २:०० बज चुके थे. अब ट्रेन छूटने में सिर्फ डेढ़ घंटा ही बाकी था.

बाप-बेटे में कुछ संवाद हुआ और अंतत नितिन ने स्टीयरिंग संभाला. हल्कू ने बैग अन्दर रखा और ड्राईवर के बगल वाली सीट पर बैठ गया.

उसने उस ड्राईवर का धन्यवाद किया और विदा ली. गाड़ी चल पड़ी. हल्कू ने राहत की सांस ली.

अन्दर बैठते ही हल्कू ने इंडियन रेल्वे की वेबसाइट पर ट्रेन की लाइव लोकेशन पता की. ट्रेन अभी १५ मिनट की देरी से चल रही थी. उसका महत्वाकांक्षी मन फिर उम्मीदे पालने लगा. उसने हिसाब लगाया कि पिक-अप अगर ८०-९० की गति से चले तो वह ४०-४५ मिनट में ही जयपुर की सीमा पर पहुँच जाएगा. और फिर उतरते ही कोई ऑटो या टैक्सी लेकर स्टेशन पहुँच जायेगा. ट्रेन १०-१५ मिनट देरी से बनी रही तो उसे अवश्य पकड़ लेगा.

उसने नितिन से स्पीड बढ़ाने को कहा. नितिन ने गाड़ी की स्पीड बढ़ाई भी. पर कुछ भी करके गाड़ी की गति ६०-७० से ऊपर नहीं जा रही थी. सड़क भी ऐसी नहीं थी कि और स्पीड बढ़ाई जा सके.

उसने फ़ोन जेब में रखा और आंख बंद कर ईश्वर की शरण ली. ईस्वर करे ट्रेन घंटा भर लेट हो जाए. इसी विचार में कब उसकी आँख लग गई, पता ही नहीं चला.

जब आँख खुली तो नितिन किसी ऑफिस के बाहर अपने गाड़ी पार्क कर रहा था.

उसने कहा - ‘जयपुर आ गया’.

हल्कू ने हथेलियों से अपनी दोनों आखों को मसलते हुए पुछा – ‘क्या समय हुआ है’?

जवाब देने से पहले नितिन नीचे उतर गया था.

हल्कू ने अपना मोबाइल निकाला तो देखा की घड़ी ३:१५ बजा रही थी.

उसने मोबाइल में देखा कि अपना समय पूरा करके ट्रेन जयपुर पहुँच चुकी थी. और इस समय प्लेटफार्म पर ही खड़ी थी. उस ट्रेन को पकड़ना अब असम्भव था, क्योंकि जिस जगह पर नितिन ने छोड़ा था, वह अभी भी स्टेशन से १५ मील दूर था. आसपास कोई साधन भी नहीं दिख रहा था.

अगली ट्रेन ६:३० बजे थी.

उसने टैक्सी बुकिंग की एप्प में देखा. आसपास कोई कैब भी उपलब्ध नहीं थी.

वह गाड़ी से नीचे उतर गया.

“ट्रेन तो निकल गई है. अगली ट्रेन अभी कोई ३ घंट बाद हैं. इस समय कोई ऑटो या टैक्सी भी नहीं मिल रही है इस जगह पर. अब क्या किया जाए.” – हल्कू ने एक ही सांस में अपनी स्थिति बयान कर दी.

‘आप ऐसा करो, एक-दो घंट इसी ऑफिस में सो जाओ, सुबह होने पर चले जाना. सुबह बहुत से साधन मिल जायेंगे.’ – नितिन बोला.

निराश होकर हल्कू ने चुपचाप अपना बैग उतारा और नितिन के पीछे ऑफिस चला आया.

यह एक छोटी सी जगह थी. जिसके जाते ही एक टेबल-कुर्सी और एक बेंच लगी हुई थी. सामने खाली जगह पर एक बिस्तर लगा हुआ था. जिस पर ऑफिस का सुरक्षाकर्मी सोया हुआ था. अंदर एक छोटा सा स्टोर रूम था.

नितिन हल्कू को यहाँ छोड़ कर आगे निकल गया.

९

'आप इस स्टोर रूम में लेट जाओ.' – हल्कू को इशारा कर सुरक्षाकर्मी स्वयं रजाई के अन्दर दुबक गया.

हल्कू बैग लेकर अन्दर चला गया. उसने सोचा, अन्दर सोने की व्यवस्था होगी. शायद कोई बेंच या तख़्त हो.

पर वहां ऐसा कुछ नहीं था. चारों तरफ कबाड़ पड़ा हुआ था. कार्डबोर्ड के कई खाली खोखे पड़े हुए थे. कौने में एक इन्वर्टर बैटरी लगी हुई थी. दुसरे कौने में पुराने अखबारों का ढेर लगा हुआ था, जो लगभग पुरे स्टोर रूम में बिखरे हुए थे.

हल्कू ने कार्डबोर्ड के दो-चार खोखों को फैलाया, अखबारों का तकिया बनाया और लेट गया.

सोने से पहले ५:३० बजे का अलार्म लगाया. ५:३० बजे की ही टैक्सी भी बुक कर ली. और कम्बल लपेट कर लेट गया. उसने तय किया कि उठते ही सीधे स्टेशन जाएगा. इस बार ६:३० बजे वाली ट्रेन किसी भी कीमत पर नहीं छूटने देगा. यह दृढ निश्चय कर उसने आँखे बंद की और सोने को कोशिश की. थोड़ी ही देर में उसकी आँख लग गई.

अलार्म बजने से पहले ही टैक्सी ड्राईवर का फ़ोन आ गया.

टैक्सी ड्राईवर बुकिंग के समय ही पिक अप लोकेशन पर आकर खड़ा हो गया था.

हल्कू झटपट उठ खड़ा हुआ. तुरंत अपना बैग उठाया बाहर वाले कमर में आ गया जहाँ सुरक्षाकर्मी सोया था.

'मैं निकल रहा हूँ.' –सुरक्षाकर्मी को जगाते हुए हल्कू बोला. और जाकर टैक्सी में बैठ गया.

"दरवाजा बंद करके जाना" – रजाई से झांकते हुए सुरक्षाकर्मी बोला और फिर रजाई सिर के उपर खींच ली.

दरवाजे को बंद करके हल्कू सीधे टैक्सी में जाकर बैठ गया. उसके बैठते ही टैक्सी ने रफ़्तार पकड़ ली.

६:०० बजने से पहले ही हल्कू स्टेशन पर पहुँच गया. दिल्ली जाने वाली डबल डेकर ट्रेन अपने प्लेटफार्म पर खड़ी थी.

टी.टी. से पूछकर एक डिब्बे में चढ़ गया. डिब्बे में चढ़कर, हल्कू ने एक लम्बी गहरी सांस ली और एक सीट पर आकर बैठ गया.

उसके चेहरे पर एक सुकून था. उसने मोबाइल की तरफ कुछ ऐसे देखा जैसे कोई सेनापति अपने फतह किए हुए किले की और देखता है.

मोबाइल की घड़ी ठीक साढ़े छः बजा रही थी.

‘अब तो शाम की चाय घर जाकर ही पीएगा’ - यह विचार कर हल्कू मुस्कुरा दिया.

ट्रेन ठीक समय पर चल दी.

इति.

लेखक परिचय

नारायण सिंह राव ‘सैलाब’ का जन्म राजस्थान में उदयपुर जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था. इनके पिताजी एक सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य और माताजी गृहणी है. अपने पांच भाइयों के बीच आप सबसे छोटे हैं और आपसे छोटी एक बहन है. इनकी शुरूआती शिक्षा-दीखा गाँव के ही विद्यालय में हुई. उसके बाद अपने बड़े भाइयों के साथ शहर में पढ़ने आ गए. आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा हिंदी माध्यम के विद्यालयों से ही ली. ग्रामीण परिवेश और विपरीत पारिवारिक परिस्थितियों के बावजूद भी इन्होने अपनी मेहनत और लग्न से आई.आई.टी. की परीक्षा में टॉप २५० में स्थान पाया, और आई.आई.टी. रूड़की में प्रवेश लिया. यहाँ से निकलने के पश्चात देश-विदेश में रहकर विभिन्न वैश्विक प्रतिष्ठानों में कार्य किया. लेकिन कालांतर में कम अन्तराल में अपने दो भाइयों को असमय ही खो दिया. पारिवारिक परिस्थितियाँ और विकट हो गईं. लेकिन आपके इरादे और मजबूत हो गए.

अन्ना हजारे आन्दोलन से प्रभावित होकर आपने अपनी पहली प्रसिद्द पुस्तक ‘अ लिटिल बुक ओन मैसिव करप्शन’ लिखी. यह बहु-चर्चित पुस्तक आंठ भाषाओँ में प्रकाशित हुई.

९ वर्ष की नौकरी के बाद आपने आईआईएम अहमदाबाद से एक वर्षीय मैनेजमेंट की डिग्री (पी.जी.पी.एक्स.) हासिल की. आईआईएम अहमदाबाद में ही रहते हुए आपने एक प्रोफेसर के साथ मिलकर अपनी दूसरी पुस्तक ‘स्विंगिंग द मैंडेट’ लिखी. आईआईएम अहमदाबाद में ही रहकर आपने अपने कविता लेखन के शौक को भी नई ऊंचाई प्रदान की. आपने अपने इसी एक वर्ष के कोर्स के दौरान पढ़ाए गए हर एक विषय और उसे पढ़ाने वाले प्रोफेसर के उपर एक कविता लिखी. जिसे प्रोफेसर ही नहीं वरन विध्यार्थियों द्वारा भी बहुत सराहा गया. कोर्स के अंत में अपनी सभी कविताओं को आपने संकलित कर एक मैगज़ीन ‘धन्यवाद, आईआईएम अहमदाबाद’ के रूप में प्रकाशित की.

आईआईएम अहमदाबाद से निकल कर आपने ‘दी इंडियन आईरिस’ नामक एक बहु-उपयोगी पोर्टल की स्थापना की. वर्तमान में आप ‘प्राकृतिक पॉवर’ नाम की एक फर्म के निदेशक है और सौर उर्जा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं. साथ ही आप एक ‘मोटिवेशनल स्पीकर’ भी है. आप कई प्रतिष्ठित मंचों पर उद्बोधन दे चुके हैं. पुरे भारतवर्ष में आप सौ से ज्यादा मोटिवेशनल सेमिनार कर चुके हैं.

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों तथा उपन्यासों से प्रभावित होकर आपने हिंदी में लिखने का निश्चय किया. उसी के फल स्वरुप यह छोटी सी कोशिश आपके सामने हैं. आशा है आपको यह कहानी पसंद आएगी. इसके बारे में अपनी राय nsrao.iitr@gmail.com पर भेज सकते हैं अथवा @nsrao_iitr पर ट्वीट कर सकते हैं.